B-2
L-19
Ancient History

⇒ चतुर्व्यूह or व्यूहवाद

1- संकर्षण
2- वासुदेव
3- अनिरुद्ध
4- प्रद्युम्न
5- लक्ष्मी

} वीर

इसमें निम्नलिखित वीरों का वर्णन है।

वासुदेव
लक्ष्मी
संकर्षण
अनिरुद्ध

⇒ कहां-कहां भागवत धर्म / वैष्णव धर्म का उल्लेख है?

1- पाणिनी की अष्टाध्यायी (संस्कृत व्याकरण की पहली पुस्तक)
↓
इस पर महाभाष्य नामक टीका लिखा → पतंजलि ने

2- छान्दोग्य उपनिषद

3- मेगास्थनीज की इंडिका (कृष्ण को हेराक्लीज कहा गया है)

4- शुंग शासक भागभद्र (9 वां शासक) के शासन के 14 वें वर्ष ग्रीक / यवन राजदूत हेलियोडोरस आया था- इसने विदिशा में (MP) गरुड़ ध्वज स्थापित किया और स्वयं को परमभागवत कहा। इससे पता चलता है कि उस समय तक भागवत धर्म लोकप्रिय हो चुका था।

↑
स्रोत - बेसनगर अभिलेख (MP)

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

5 - कुषाण शासक हुविष्क के सिक्कों पर विष्णु की चतुर्भुजी आकृति अंकित है।

6 - गुप्त काल का प्रशासन गरुण मंडल कहलाता है।

7 - पश्चिम में चालुक्यों के शासन काल को भी गरुण मंडल कहा जाता है।

8 - गुप्तकाल में ही सर्वप्रथम हरिहर की मूर्ति बनती है।

9 - चन्द्रगुप्त-II विक्रमादित्य ने उदयगिरी में विष्णु ध्वज स्थापित किया था।

10 - जूनागढ़ अभिलेख में विष्णु की मूर्ति की स्थापना की जानकारी मिलती है।

KGS KHAN GLOBAL STUDIES IAS Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

11 - सातवाहन वंश के नागनिका के नानाघाट अभिलेख में उल्लिखित है कि हम संकर्षण और वासुदेव की उपासना करते हैं।

12 - राजपूत अभिलेखों की शुरुआत ऊँ नमों भगवते वासुदेवाय नमः के साथ होती है।

⇒ दक्षिण में वैष्णव धर्म का विकास -

- 9वीं-10वीं शताब्दी में दक्षिण में वैष्णव धर्म का प्रचार-प्रसार दो लोगों द्वारा किया गया।

1 - अलवार द्वारा (ये कुल 12 थे जिनमें एक स्त्री अण्डाल है)

2 - आचार्य द्वारा

↳ इन अलवारों ने लगभग 4000 श्लोक विष्णु की उपासना में लिखे/गाया गया, जिनका संकलन दिव्य प्रबन्धम् के नाम से जाना जाता है।

↳ यह संस्कृत में है

↳ शैली - तिरुवाय मोड़ी

↳ संतों की अमृतवाड़ी

⇒ आचार्य

1- नाथमुनि - राजेन्द्र चोल के समकालीन

↳ रचना - प्रबंधम्

↳ दक्षिण का वेद

2- यमुनाचार्य → शिष्य → रामानुजाचार्य

↓

चोल शासक कुलोतुंग-II से इनकी अनबन हो जाती है-

परिणामस्वरूप → रामानुजाचार्य को तमिल प्रदेश छोड़ना पड़ा

⇓

होयसल राजवंश जाते हैं और यहीं पर भक्ति भावना का प्रचार करते हैं।

⇓

भक्ति को दक्षिण से उत्तर रामानन्द द्वारा लाया गया।

③

रामानुजाचार्य की रचनाये। - वेदान्त दीप

2- वेदान्त सार

3- वेदान्त संग्रह

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES

५- श्रीभाष्य * बादरायण
↓
ब्रह्मसूत्र
↓
टीका → श्रीभाष्य

* रामानुजाचार्य ने श्री सम्प्रदाय चलाया।
↳ सिद्धान्त → विशिष्टाद्वैत

* रामानन्द, सिकन्दर लोदी के समकालीन थे।
↓
- इन्होंने हिन्दी में भक्ति का संदेश दिया है।
- सम्प्रदाय → रामायत सम्प्रदाय
- श्री रामार्चन पद्धति

⇒ माध्वाचार्य
↳ द्वैतवाद
↳ उपनाम - आनन्दतीर्थ
↳ सम्प्रदाय - श्री ब्रह्म सम्प्रदाय
↳ विष्णु की पूजा के ३ उपाय बताये
↓
१- अंकन
२- भजन
३- नामकरण

⇒ निम्बार्काचार्य
↳ द्वैताद्वैतवाद
सम्प्रदाय - सनक सम्प्रदाय

- वल्लभाचार्य -
↳ शुद्धाद्वैत
↳ रुद्र सम्प्रदाय
↳ पुष्टिमार्ग दिया

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES

→ विट्ठलस्वामी
- मलबर के समकालीन
- विजयनगर के शासक कृष्णदेवराय के दरबर में शास्त्रार्थ किया था

→ चैतन्यमहाप्रभु
- मूल नाम - निमाई
- जन्म → बंगाल (नदिया जिला)
- नामकरण → विश्वम्भर, विद्यानागर
- कीर्तन पद्धति की शुरुआत की
- संघ - गोसांई संघ
- सम्प्रदाय - गौड़ीय सम्प्रदाय
- आत्मकथा - शिक्षाष्टक
- सिद्धान्त - अचिन्त्य भेद-भाव

→ शंकरदेव
- असम का चैतन्य महाप्रभु
- संघ - शंकर शरणार्थ संघ

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

⇒ **शैव धर्म**

↳ शिव को केन्द्र में रखकर पूजा-अर्चना की जाती है।

सन्दर्भ - सिंधुघाटी सभ्यता

↳ पशुपति मुहर प्राप्त (आद्य शिव)

- ऋग्वेद — रूद्र → त्र्यम्बक
- उत्तर वैदिक काल → कई महत्वपूर्ण सन्दर्भ मिले
- मौर्य काल → कौटिल्य का अर्थशास्त्र

↓

नगर के मध्य में शिवालय होना चाहिए

मेगास्थनीज (इण्डिका) — कृष्णा - हैराक्लीज; शिव — डायोनीसियस

- मौर्योत्तर काल → कुषाण काल

↓

विम कडफिसस

├ सिक्कों पर शिव, नंदी व त्रिशूल का चित्र

→ गुप्तकाल → कालीदास

↳ रघुवंशम → पार्वती परमेश्वर से शुरुआत

↓

कुमारसंभव

└ स्कंध (कार्तिकेय) का वर्णन

→ भूमरा → शिव मंदिर

└ नचना कुठार → पार्वती मंदिर

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

⇒ दक्षिण में शैव धर्म का विकास

जिन साधु संतों ने दक्षिण में शैव धर्म का प्रचार-प्रसार किया उन्हें नयनार कहा जाता है।

→ कुल नयनार — 63

→ इनके गीतों का संकलन — { देवारम / देवारम स्तोत्र } पंचम वेद

- शैली → तिरुवाय मोड़ी

= आचार्य -

↳ शास्त्रार्थ

- नाम्बि आंडार नाम्बि
  ↳ राजेन्द्र चोल के दरबार में थे।
  ↳ दक्षिण का वेदव्यास कहा जाता था।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR